Unit II

प्रबंधन के कार्य: योजना, आयोजन, स्टाफिंग, दिशा और नियंत्रण | Read this article in Hindi to learn about the seven important functions of management. The functions are:- 1. नियोजन (Planning) 2. संगठन (Organising) 3. नियुक्तियां (Staffing) 4. निर्देशन (Direction) 5. समन्वय (Co-Ordination) 6. नियन्त्रण (Control) 7. उत्प्रेरण (Motivation).

प्रबन्ध के प्रमुख कार्य निम्न हैं:

कार्य # 1. नियोजन (Planning):

नियोजन मस्तिष्क की एक प्रक्रिया है, जिसमें बुद्धिमता, कल्पना शक्ति, अग्रदृष्टि पक्के इरादे आदि की आवश्यकता होती है । अतः नियोजन का अर्थ यह है कि पूर्व में ही यह निश्चय करना कि किसी कार्य को किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु किस तरह, किस स्थान पर किस समय तथा किसके द्वारा किया जाना चाहिए? दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नियोजन वांछित परिणामों को प्राप्त के लिए कार्य की विधि ज्ञात करना है ।

2. संगठन (Organising):

नियोजन द्वारा उद्देश्य एवं लक्ष्य आदि निर्धारित करने के पश्चात उन्हें कार्यान्वित करना होता है, जिन्हें प्रबंध 'संगठन' के माध्यम से करता है । संगठन का आशय योजना द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति करने वाले तंत्र से है ।

उपक्रम की योजनाएं चाहे कितनी ही अच्छी एवं आकर्षक क्यों न हों, यदि उनको कार्यान्वित करने के लिए संगठन का अभाव है तो सफलता की कामना करना निष्फल ही होगा । अतः नियोजन द्वारा निर्धारित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को क्रियान्वित करने तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि एक ऐसे कुशल एवं प्रभावी संगठन का निर्माण किया जाये जिसमें नियुक्त सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने-अपने लिए निर्धारित कार्यों को इस प्रकार सम्पन्न करें कि उनके कार्यों में किसी प्रकार की कोई कठिनाई उत्पन्न न हो ।

3.नियुक्तियां (Staffing):

किसी भी संगठन के ढांचे का निर्माण तब ही सम्भव है जब उसमें कुशल एवं योग्य व्यक्ति नियुक्त हों । नियुक्तियाँ करना प्रबन्ध का प्रशासनिक 'जिसका अर्थ है- संगठन की योजना के अनुसार अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति करना, उनको आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करना, पदोन्नति, स्थानान्तरण, सेवा मुक्ति आदि की व्यवस्था करना ।

4.निर्देशन (Direction):

प्रबन्ध मूलतः व्यक्तियों से काम करवाने की कला है । दूसरे व्यक्तियों से काम करवाने के लिए यह आवश्यक है कि उनके कार्य को निर्धारित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्धारित दिशाओं में प्रशस्त तथा निर्देशित किया जाये ।

निर्देशन का अर्थ है- उपक्रम में विभिन्न नियुक्त व्यक्तियों को यह बतलाना कि उन्हें क्या करना है कैसे करना है तथा यह देखना कि वे व्यक्ति अपना कार्य उसी प्रकार कर रहे है या नहीं । निर्देशन प्रबन्ध का महत्वपूर्ण कार्य इसलिए है क्योंकि यह संगठित प्रयत्नों को प्रारम्भ करता है, प्रबन्धकीय निर्णयों को वास्तविकता का जामा पहनाता है और उद्योग अथवा व्यवसाय को अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर करता है ।

5.समन्वय (Co-Ordination):

एक ही कार्य की विभिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न रूप से व्याख्या करना मानव जाति का स्वभाव है । इन वैचारिक मतभेदों से उपक्रम के सामूहिक उद्देश्यों को पूर्ण करना कठिन है । इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत क्रियाओं, विचारों कार्यकलापों तथा भावनाओं में सामंजस्य लाना आवश्यक है ।

इसी सामंजस्य को समन्वय कहते हैं । प्ले तथा रैले के अनुसार विभिन्न क्रियाओं के मध्य एकता बनाये रखने के उद्देश्य से सामान्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु सामूहिक प्रयत्नों में सुव्यवस्था करने को ही समन्वय कहते है । उक्त विचारों से यह स्पष्ट है कि समन्वय वह प्रक्रिया है, जिससे व्यक्तिगत क्रियाओं में सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सामंजस्य स्थापित किया जाता है ।

6.नियन्त्रण (Control):

क्या समस्त कार्य योजनाबद्ध चल रहे हैं? क्या क्रियाएं निर्धारित लक्ष्यों की ओर अग्रसर हो रही है? और क्या इनमें कोई सुधार की आवश्यकता है? इन समस्त प्रश्नों का हल प्रभावशाली नियंत्रण में निहित है । नियंत्रण वर्तमान कार्यों को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों से मिलान करने की वह प्रक्रिया है जिससे मानवीय तथा भौतिक साधनों के औचित्य पूर्ण उपयोग का ज्ञान हो सके तथा यदि आवश्यक हो तो उन प्रक्रियाओं में सुधार किया जा सके ।

7.त्प्रेरण (Motivation):

किसी भी व्यवसाय अथवा उद्योग को सुचारु रूप से चलाने के लिए भौतिक तत्वों के अतिरिक्त एक और तत्व की आवश्यकता होती है, जिसे मानव तत्व अथवा श्रम तत्व कहते है । इस श्रम तत्व के द्वारा ही भौतिक साधनों का उपयोग किया जाना सम्भव होता है ।